Indian J. Soc. & Pol. 07 (01):63-66:2020 **ISSN: 2348-0084(P)**
ISSN: 2455-2127(O)

सीतापुर जनपद के महाविद्यालयी छात्रों में राजनीति विज्ञान विषय के अध्ययन की स्थिति और प्रभाव के स्तर का परीक्षण

रजनीकान्त श्रीवास्तव[1]

[1]एसोसियेट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, आर0एम0पी0 (पी0जी0) कालेज, सीतापुर, उ0प्र0, भारत

ABSTRACT

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और मानव जीवन के विभिन्न पक्षो का अध्ययन समाज विज्ञान की विभिन्न शाखाओं के अन्तर्गत किया जाता है। मानव जीवन के राजनीति पक्ष का अध्ययन राजनीति विज्ञान करता है, किन्तु यह एक ऐसा क्षेत्र है जो मानव जीवन के सभी पक्षो को नियंत्रित करने में सक्षम है। अतः एक सभ्य समाज के प्रत्येक नागरिक के लिए राजनीति विज्ञान का ज्ञान का होना अनिवार्य है। शैक्षणिक विषय के रूप में राजनीति विज्ञान कला संकाय के छात्र/ छात्राओं में अत्याधिक रूचि का विषय है। राजनीति विज्ञान की उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे भारतीय युवाओं के लिए आवश्यक है, कि वे अपने अधिकारों और कर्तव्यों के साथ–साथ संवैधानिक संस्थाओं और लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं का समुचित प्राप्त करने के साथ–साथ भारतीय लोकतन्त्र को सुद्वढ़ करने के लिए राजनीतिक रूप से सक्रिय भूमिका निभाये। उच्च शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थियों में उचित–अनुचित की समझ पैदा करने के साथ–साथ विद्यार्थियों में शोध और विश्लेषण की अर्न्तदृष्टि विकसित करना भी है। प्रस्तुत शोध पत्र में जनपद सीतापुर के महाविद्यालयों में राजनीति विज्ञान की शिक्षा प्राप्त कर रहें विद्यार्थियों में विषय के प्रति अध्ययन की रूचि स्तरीय साहित्य का अध्ययन उनकी शोध अभिरूचि और समाज में उनकी राजनीतिक सक्रियता का पता लगाने का प्रयास किया गया है। शोध के लिए सर्वेक्षण की पद्धति का प्रयोग करते हुए प्राथमिक सूचनायें एकत्र करते हुए कुछ मौलिक निष्कर्ष निकालने का प्रयास किया गया है।

KEYWORDS : *शिक्षा, महाविद्यालय, राजनीति विज्ञान, शोध अभिरूचि, राजनीतिक सक्रियता, स्नातक छात्र*

महान यूनानी विचारक अरस्तू ने राजनीति को सर्वोच्च विज्ञान की संज्ञा प्रदान की थी और अल्फ्रेड ग्रेजिया ने उसे विज्ञानों की महारानी की संज्ञा से सुशोभित किया। इसके पीछे कारण यही है कि समाज में सभी प्रक्रियाओं को नियंत्रित करने की शक्ति आज भी यदि किसी विषय में है तो वह राजनीति ही है। राजनीति की परिभाषा अनेक विद्वानों ने अनेक प्रकार से करने का प्रयास किया है किन्तु एक तथ्य जो सभी परिभाषाओं के मूल में है वह यही है कि एक सभ्य समाज की स्थापना के लिए एक सुशासन पर आधारित व्यवस्था के संचालन के लिए राजनीति ही एक मात्र माध्यम है। यही कारण है कि सभी प्राचीन विद्वानों ने राजनीति की परिभाषा राज्य के संदर्भ में ही करने का प्रयास किया क्योंकि राज्य के मूल मे ही राजनीति है और राज्य का उद्देश्य सद्जीवन की प्राप्ति।

प्लैटो और अरस्तू ने स्पष्ट रूप से स्वीकार किया कि एक श्रेष्ठ शासन प्रणाली की स्थापना के लिए आवश्यक है कि राज्य के सभी नागरिकों को राजनीति विज्ञान का पर्याप्त ज्ञान हो जिसके द्वारा ही वे राज्य के लिए उचित और अनुचित के भेद को समझ सकेंगे और राज्य के लिए श्रेष्ठ नागरिकों का निर्माण हो सके। नागरिको के बिना कोई भी राज्य या शासन श्रेष्ठ नही बन सकता और इसीलिए नागरिकशास्त्र विषय का अध्ययन युवा छात्रों के लिए अत्याधिक महत्वपूर्ण हो जाता है। लोकतंत्र में जहॉ प्रत्येक युवा मतदाता देष का भविष्य तय करने मे भागीदारी करता है यह आवश्यक है कि उसे न केवल लोकतांत्रिक परंपराओं का सही ज्ञान हो बल्कि राष्ट्र और संविधान से जुड़ी राजनीतिक अवधारणों को लेकर उसका मास्तिष्क परिपक्व और स्पष्ट हो। आज सारे भारत में नागरिकता कानून को लेकर जो उपद्रव और हिंसा हो रही है उनमें सर्वाधिक सहभागिता करने वाले विश्वविद्यालयी छात्र ही है। विगत कुछ वर्षो में जे0एन0यू0 हैदराबाद वि0वि0, जामिया वि0वि0 जैसे बड़े वि0वि0 के छात्रों द्वारा सरकार के विरूद्ध आंदोलनो का जो क्रम दिखायी दिया है वह निश्चित ही स्वस्थ लोकतंत्र की परंपराओं तथा लोकतांत्रिक संस्थाओं के लिए चिंता का विषय है। अजमल कसाब की फॉसी पर खेद प्रकट करने वाले युवा किस प्रकार की राजनीति की पैरवी कर रहे है यह शोध का विषय है। आज सोशल मीडिया के दौर में जहॉ अफवाहें आग से भी तेज गति से समाज में फैल रही है युवा छात्रों का दायित्व और बढ़ जाता है कि वे लोकतंत्र को बचाने के लिए स्वस्थ लोकतांत्रिक परंपराओ का अनुसरण करें। राजनीति विज्ञान का अध्ययन ऐसे में निश्चित ही भारतीय युवा छात्रों को भ्रमित होने से बचाने में बड़ी भूमिका निर्वहन कर सकता है।

पूर्व साहित्य का अध्ययन

अनेक विद्वानों ने नागरिक शिक्षा, छात्रों की राजनीतिक सक्रियता और राजनीतिक सहभागिता तथा राजनीति पर उसके प्रभावों का अध्ययन करने का प्रयास किया है।

Bachnerj (2010) ने अपने लेख "From Class room to Voting Booth: The effect of Civil education on turnout." में नागरिक शास्त्र विषय के प्रभाव का अध्ययन, युवा छात्रों के मतदाता बनने की प्रक्रिया के सम्बन्ध में किया है। Achterberg, P (2006) ने अपने लेख "Class Voting in the new Political Culture: Economic, Cultural and Environmental Voting in 20 western countries" में पश्चिमी देशों में इसी तरह का अध्ययन किया है। Bersford,Q and Phillips, H.C.J. (1997) ने अपने लेख "Spectators in Australian Politics? Young voters, Interested in Politics and Political Issues." में युवा मतदाताओं और उनकी राजनीतिक अभिरूचियों और सक्रियता का अध्ययन आस्ट्रेलिया की राजनीति के सम्बन्ध में किया है।

1: Corresponding Author

LJ Saha (2000) ने अपने लेख "Political Activism and civil education among Australian secondary school students."में आस्ट्रेलिया के सेकेन्ड्री स्कूल के छात्रों मे नागरिक शास्त्र की शिक्षा और उनकी राजनीतिक सक्रियता का अध्ययन का प्रयास किया। Callahan, R. M, Muller, C and Schiller, K.S. (2010) ने अपने लेख "Preparing the next generation for Electoral Engagement: Social Studies and the School context." में स्कूलों में सामाजिक विज्ञान विषय की शिक्षा को युवा छात्रों को मतदाताओं की नई पीढ़ी को तैयार करने में प्रभावी और सशक्त माध्यम के रूप में अध्ययन करने का प्रयास किया है।

उपरोक्त किये गये विभिन्न शोधो के अनुक्रम में शोधकर्ता द्वारा राजनीति विज्ञान विषय के छात्रों पर यह शोध किया गया है। यद्यपि यह शोध कार्य बहुत संक्षिप्त स्तर पर उत्तर प्रदेश के जनपद सीतापुर के परिक्षेत्र में आने वाले महाविद्यालयों तक सीमित है।

उद्देश्य एवं परिकल्पना

भारतीय विश्वविद्यालयों तक अभी भी उच्च शिक्षा के लिए पहुंचने वाले युवाओं का प्रतिशत 25% से भी कम है। इन उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले युवाओं में समाजविज्ञान के विषयों से अध्ययन करने वाले छात्रों में राजनीति विज्ञान विषय अत्याधिक लोकप्रिय है। स्नातक, परास्नातक, शोध के अतिरिक्त लोक सेवा की परीक्षाओं के लिए भी राजनीति विज्ञान आकर्षण का विषय रहता है लेकिन इस सबसे ऊपर राजनीति विज्ञान का अध्ययन युवा छात्रों में राजनीतिक समाजीकरण का एक बड़ा माध्यम है। राजनीति विज्ञान का अध्ययन छात्रों में राजनीतिक सक्रियता और राजनीतिक सहभागिता बढ़ाने के साथ ही संवैधानिक संस्थाओं में आस्था और राष्ट्र प्रेम और स्वस्थ लोकतांत्रिक परंपरा का भी विकास करता है।

इसके लिए आवश्यक है कि छात्र राजनीति विज्ञान का रूचि से अध्ययन करने के साथ–साथ राजनीति विज्ञान विषय में उच्च कोटि की पुस्तकों का अध्ययन करें राजनीतिक साहित्य के पठन–पाठन से उनमें स्वस्थ नागारिक चेतना का विकास हो सकेगा। पुस्तकों के अध्ययन के साथ ही उन्हे शोध पर भी अपना ध्यान केंद्रित करना चाहिये जो उच्च शिक्षा का वास्तविक लक्ष्य है। राजनीति विज्ञान के विद्यार्थियों का शोध उन्मुख अध्ययन उन्हें राजनीतिक गतिविधियों और अवधारणाओं की परख करने और सही गलत के विश्लेषण में सहायक सिद्ध होगा। अध्ययन और शोध के साथ ही इन युवा छात्रों को समाज में जाकर राजनीतिक समाजीकरण और राजनीतिक सहभागिता करने का दायित्व भी अनिवार्यतः लेना चाहिये ताकि आज जो राष्ट्र विरोधी तत्व समाज में हिंसा द्वेष और विखंडन का प्रयास कर रहे है उन्हे रोकने में इय युवा शिक्षितों की भूमिका सर्वोपरि होगी। इसी आशय से प्रस्तुत शोध पत्र में निम्नलिखित शोध प्रश्नों पर केंद्रित किया गया है।

- क्या सीतापुर के महाविद्यालयों में राजनीति विज्ञान विषय के स्नातक छात्र राजनीतिक अवधारणां की समझ के लिए स्तरीय एवं श्रेष्ठ पुस्तको का अध्ययन करते है?
- क्या सीतापुर के महाविद्यालयों में राजनीति विज्ञान के स्नातक छात्र शोध अध्ययन में संलग्न रहते है?

उत्तर प्रदेश के महाविद्यालयों में राजनीति विज्ञान विषय लोकप्रियता की दृष्टि से हिन्दी और समाजशास्त्र के बाद तीसरे स्थान पर है। प्रत्येक वर्ष कला स्नातक करने वाले छात्र/ छात्राओं में बड़ी संख्या राजनीति विज्ञान विषय का चयन करती है। समाज विज्ञान के प्राध्यापक बनने की दृष्टि से सामान्य ज्ञान की दृष्टि से और प्रतियोगी परीक्षाओं की दृष्टि से राजनीति विज्ञान विषय के महत्व को सभी छात्र/ छात्राओं द्वारा स्वीकार किया जाता है। परीक्षा फल से यह भी स्पष्ट होता है कि राजनीति विज्ञान विषय में प्रत्येक महाविद्यालय में उत्तीर्ण छात्रों का औसत 85% से अधिक है। स्नातक अन्तिम वर्ष में विषय में अपनी विशेष रूचि के कारण ही राजनीति विज्ञान का विकल्प चुनते है।स्पष्ट रूप में ऐसी स्थिति में कक्षाओं का स्तर बढ़ने के साथ विषय में रूचि और स्पष्टता बढ़ना स्वाभाविक है। विद्यार्थियों की रूचि और परीक्षा फल को देखते हुए शोध में निम्नलिखित परिकल्पनाओं का परीक्षण उपलब्ध सूचनाओं और आकड़ो के आधार पर करने का प्रयास किया गया है।

1. स्नातक प्रथम वर्ष से द्वितीय और तृतीय वर्ष में जाने पर विद्यार्थियों में राजनीति विज्ञान की स्तरीय पुस्तकों में रूचि बढ़ती जाती है।
2. स्नातक प्रथम वर्ष से द्वितीय और तृतीय वर्ष में जाने पर राजनीतिक अवधारणाओं और घटनाओं की समझ और अधिक स्पष्ट होती जाती है।
3. स्नातक प्रथम वर्ष से द्वितीय और तृतीय वर्ष में जाने पर विद्यार्थियों में शोध गतिविधियों में रूचि में बृद्धि होती है।
4. स्नातक प्रथम वर्ष से द्वितीय और तृतीय वर्ष में जाने पर उनका राजनीतिक ज्ञान परिपक्कव होने के कारण समाज में उनकी राजनीतिक सद्भावना बढ़ती है।

शोध प्ररचना एवं शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध पत्र जनपद सीतापुर के तीन महाविद्यालयों के कुल 90 छात्र/ छात्राओं पर किये गये सर्वेक्षण से प्राप्त प्राथमिक आकड़ों पर आधारित है। शोध के लिए सीतापुर में स्थित तीन मुख्य महाविद्यालयों को चयनित किया गया है। राजकीय महाविद्यालय,सीतापुर, आर0एम0पी0 महाविद्यालय, सीतापुर (अनुदानित) तथा डी0पी0 वर्मा, महाविद्यालय, सीतापुर (स्ववित्तपोषित) में से प्रत्येक महाविद्यालय से स्नातक प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय वर्ष से प्रत्येक से 10 (कुल 30) राजनीति विज्ञान विषय के विद्यार्थियों का चयन दैवनिदर्शन विधि से करते हुए कुल 90 विद्यार्थियों को चुना गया है। प्रत्येक महाविद्यालय के तीस विद्यार्थियों में आधे छात्र और आधी छात्रायें चुनी गयी है ताकि छात्राओं को भी समुचित प्रतिनिधित्व प्राप्त हो सके। सूचनायें एकत्र करने के लिए एक दो स्तरीय प्रश्नावली के द्वारा स्वंय जाकर सूचनायें एकत्र की गयी है। प्राप्त सूचनाओं के सटीक विश्लेषण के लिए सांख्यिकी तकनीक की सहायता ली गयी है। शोध पत्र में स्नातक प्रथम वर्ष को UG-1 द्वितीय वर्ष को UG-2 तथा तृतीय वर्ष को UG-3 कोड किया गया है। हॉ के लिए Y तथा नही के लिए N कोड किया गया है। यथा आवश्यक Chi Sq परीक्षण के द्वारा कक्षाओं के बढ़ते स्तर और सम्बन्धित गतिविधियों में सम्बन्धो का पता लगाने का प्रयास किया गया है। शोध कार्य केवल स्नातक स्तर तक के छात्र/ छात्राओं तक सीमित रखा गया है।

प्राप्त आकड़ों का सॉख्यिकी विश्लेषण

सारणी से स्पष्ट है कि तीनों महाविद्यालयों में तीनों स्नातक कक्षाओं में से 5 छात्र और 5 छात्राओं का चयन किया गया है। इस प्रकार प्रत्येक महाविद्यालय से कुल 15 छात्र और 15 छात्रायें चुनी गयी

है। और कुल 90 उत्तरदाताओं ने इस सर्वेक्षण में भाग लिया है। प्रतिभागीयों के चयन में आयु, जाति, धर्म, निवास जैसे चरो को छोड दिया गया है क्योंकि परिकल्पनाओं के परीक्षण में इनकी भूमिका की आवश्यकता नही समझी गयी।

सारणी –1 : उत्तरदाताओं की रूपरेखा का विश्लेषण

महाविद्यालय का नाम	छात्र			छात्रायें			योग
	UG-1	UG-2	UG-3	UG-1	UG-2	UG-3	
आर0एम0पी0	5	5	5	5	5	5	**30**
डी0डी0यू0	5	5	5	5	5	5	**30**
डी0पी0 वर्मा	5	5	5	5	5	5	**30**
योग	**15**	**15**	**15**	**15**	**15**	**15**	**90**

सारणी –2 : स्तरीय पाठ्य पुस्तके तथा गेस पेपर से अध्ययन और कक्षा के स्तरो के अन्तः सम्बन्ध का विश्लेषण

स्तरीय पुस्तको के अध्ययन की स्थिति				
कक्षा का स्तर	**Y (%)**	**N (%)**	**योग (%)**	**Chi Sq.**
UG-1	23.3	76.7	100	.333
UG-2	13.3	86.7	100	
UG-3	10	90	100	
योग	16.6	84.4	100	
गेस पेपर से अध्ययन की स्थिति				
कक्षा का स्तर	**Y(%)**	**N(%)**	**योग (%)**	**Chi Sq.**
UG-1	90	10	100	.690
UG-2	86.7	13.3	100	
UG-3	93.3	6.7	100	
योग	90	10	100	

सारणी के प्रथम भाग को देखने से स्पष्ट है कि महाविद्यालय स्तर पर राजनीति विज्ञान के अध्ययन के लिए स्तरीय पुस्तकों का प्रयोग करने वाले छात्र / छात्राओं का प्रतिशत मात्र 16.6% है जोकि उच्च शिक्षा के लिए बहुत ही निराशाजनक है। 84.4% छात्र / छात्रायें स्नातक स्तर का अध्ययन बिना स्तरीय पुस्तकों के करते है। कक्षावार स्थिति को देखने से स्पष्ट होता है कि प्रथम वर्ष से तृतीय वर्ष तक जाते–जाते विद्यार्थियों में स्तरीय पुस्तकों को खरीदने और उनके अध्ययन की रूचि और घटती जा रही है। यद्यपि यह आश्चर्यजनक प्रतीत हो रहा है किन्तु प्रथम वर्ष के छात्र नये होते है अतः वे बताई गयी पुस्तकों को प्रथम वर्ष में तो खरीद लेते है लेकिन महाविद्यालयी परिवेश में जैसे–जैसे घुलते जाते है वे भी अगले वर्षो में पुस्तकें खरीदना और पढ़ना कम कर देते है। Chi Sq परीक्षण से स्पष्ट है कक्षा के विभिन्न स्तरों के छात्रों और स्तरीय पुस्तकों के अध्ययन मे कोई निश्चित सम्बन्ध नही है । सारणी के दूसरे भाग से पता चलता है कि राजनीति विज्ञान के विद्यार्थियों में गेस पेपर से अध्ययन करने की प्रवृत्ति बहुत ही अधिक है। 90% छात्र मानते है कि वे गेस पेपर के द्वारा ही विषय का अध्ययन करते है। बी0ए0 तृतीय वर्ष के विद्यार्थियों का प्रतिशत 93.3%है Chi Sq परीक्षण से स्पष्ट है कि कक्षा के स्तर और गेस पेपर से अध्ययन से कोई निश्चित सम्बन्ध स्थापित नही होता है। यह प्रवृत्ति तीनों कक्षाओं में समान रूप से पायी जाती है।

सारणी –3 :शोध अभिरूचि

सेमिनार / कान्फ्रेन्स में प्रतिभाग				शोध पत्र लेखन			शोध पत्रिकाओं का अध्ययन/ सदस्यता		
कक्षा का स्तर	**Y(%)**	**N(%)**	**योग(%)**	**Y(%)**	**N(%)**	**योग(%)**	**Y(%)**	**N(%)**	**योग(%)**
UG-1	Nil	100	100	Nil	100	100	Nil	100	100
UG-2	Nil	100	100	Nil	100	100	Nil	100	100
UG-3	Nil	100	100	Nil	100	100	Nil	100	100
योग	Nil	100	100	Nil	100	100	Nil	100	100

सारणी से स्पष्ट है कि सभी महाविद्यालयों के छात्र / छात्राओं में शोध अभिरूचि पूर्णतः शून्य है किसी भी छात्र / छात्रा ने न तो कभी किसी सेमिनार / कान्फ्रेन्स जैसे गतिविधि में प्रतिभाग किया है न ही कभी उन्होने शोध पत्र लेखन का कार्य किया है। कोई भी छात्र/ छात्रा न तो शोध पत्र का अध्ययन करता है और न तो उन्होने किसी शोध पत्रिका की सदस्यता ही ले रखी है। उच्च शिक्षा के विद्यार्थियों के लिए यह घोर निराशा का विषय है कि वे शोध के नाम से भी परिचित नही है। आज समाज विज्ञानों में शोध कार्य का स्तर गिरने का शायद यही बड़ा कारण है कि तीन वर्ष के अध्ययन में छात्र / छात्रायें न तो शोध अभिरूचि का विकास कर पाते और न तो शोध के महत्व को समझ पाते है। राजनीति विज्ञान के पाठ्यक्रमों में शोध पद्धति का ज्ञान स्नातक स्तर पर प्रदेश के किसी भी विश्वविद्यालय में शायद ही शामिल हो।

सारणी –4 :राजनीति विज्ञान की अवधारणों की स्पष्टता और कक्षाओं के स्तर में अन्तर सम्बन्ध

कक्षा का स्तर	राजनीति विज्ञान की अवधारणों की स्पष्टता			
	Y(%)	**N(%)**	**योग(%)**	Chi Sq.
UG-1	26.7	73.3	100	.271
UG-2	30	70	100	
UG-3	13.3	86.7	100	
योग	23.3	76.7	100	

सारणी – 4 से स्पष्ट है कि 76.7% विद्यार्थी अपने विषय की अवधारणों को लेकर स्पष्ट नही है। इस प्रश्न के अन्तर्गत विद्यार्थियों से प्रथम वर्ष के पाठ्यक्रम पर आधारित 5 वस्तुनिष्ठ अवधारणात्मक प्रश्न पूछे गये थे। प्रथम वर्ष के मात्र 26.7% द्वितीय वर्ष के 30% विद्यार्थी ही इसका उत्तर दे सके। बी0ए0 तृतीय वर्ष के छात्रों की स्थिति और भी खराब है क्योंकि इस कक्षा के मात्र 13.3% विद्यार्थी अवधारणाओं को स्पष्टता बता सकें। Chi Sq परीक्षण से स्पष्ट है कि कक्षा के बढ़ते स्तर और विद्यार्थियों में अवधारणाओं की स्पष्ट समझ के बीच कोई निश्चित अन्त सम्बन्ध बताया नही जा सकता। प्रथम वर्ष की तुलना में द्वितीय वर्ष के विद्यार्थियों में स्पष्टता का प्रतिशत अधिक है जबकि तृतीय वर्ष में आने पर वह पुनः कम दिखाई देता है।

सारणी संख्या–5 से स्पष्ट है कि राजनीति विज्ञान के छात्र/ छात्राओं में राजनीति क्रियाशीलता बहुत अधिक नही है। राष्ट्रीय मतदाता अभियान जिसका भारतीय निर्वाचन आयोग द्वारा उच्च शिक्षण संस्थाओं में प्रचार प्रसार प्रमुखतः से किया जा रहा है, मे प्रतिभाग करने वाले विद्यार्थियों का प्रतिशत मात्र 10% है। स्नातक प्रथम और द्वितीय वर्ष के छात्र/ छात्राओं की सहभागिता शून्य है। चुनाव प्रचार और राजनीतिक दलों से सम्बद्धता को लेकर भी राजनीति विज्ञान के छात्रों में बहुत अधिक रूचि नही है। कुल उत्तरदाताओं का 72% इन गतिविधियों में सक्रिय नही है। कक्षाओं के स्तर बढ़ने के साथ इन गतिविधियों में कोई भी बृद्धि दिखाई नही दे रही। Chi Sq परीक्षण से यह तथ्य प्रमाणित भी हो जा रहा है। उच्च शिक्षा के छात्र विद्यार्थियों का एक सामाजिक दायित्व भी होता है। राजनीति विज्ञान के विद्यार्थियों से अपेक्षा है कि वे समाज के लोगों को अधिकारों और कर्तव्यों संवैधानिक संस्थाओं तथा मतदान आदि के लिए जागरूक व प्रेरित करे किन्तु ऊपर देखने से पता चलता है कि राजनीति विज्ञान के विद्यार्थियों में मात्र 23.3%ही इस कार्य में रूचि स्वीकार करते है। जबकि 76.7%विद्यार्थियों ने स्पष्ट रूप से इसमें अपनी अस्वीकृति दी है। कक्षाओं का स्तर बढ़ने से भी विद्यार्थियों की स्थिति में कोई बदलाव दिखाई नही देता है। Chi Sqपरीक्षण से यह

स्पष्ट होता है कि विद्यार्थियों की राजनीतिक सक्रियता और कक्षाओं के बढते स्तर में कोई सम्बन्ध स्थापित नही किया जा सकता।

निष्कर्ष और समाधान

आकड़ों और सूचनाओं के विश्लेषण से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुयेः–

सारणी –5 : राजनीतिक गतिविधियों में सहभागिता और कक्षा के स्तरों में अन्तः सम्बन्ध

	राष्ट्रीय मतदाता अभियान				चुनाव प्रचार / दलीय सम्बद्धता				लोगो को जागरूक करना			
कक्षा का स्तर	**Y(%)**	**N(%)**	**योग (%)**	Chi Sq.	**Y(%)**	**N(%)**	**योग(%)**	Chi Sq.	**Y(%)**	**N(%)**	**योग(%)**	Chi Sq.
UG-1	Nil	100	100	.045	36.7	63.3	100	.412	30	70	100	.475
UG-2	Nil	100	100		23.3	76.7	100		23.6	76.7	100	
UG-3	10	90	100		23.3	76.7	100		16.7	83.3	100	
योग	10	90	100		27.8	72.2	100		23.3	76.7	100	

- जनपद सीतापुर के महाविद्यालयी विद्यार्थियों में राजनीति विज्ञान विषय के अध्ययन में स्तरीय श्रेष्ठ पुस्तकों को खरीदने एवं उनसे अध्ययन करने के प्रति रूचि बहुत ही कम है।
- महाविद्यालय स्तर से विद्यार्थी अधिकशताः गेस पेपर जैसे निम्न कोटि के साधनों द्वारा राजनीति विज्ञान का अध्ययन करते है।
- स्तरीय पुस्तको के अभाव में अधिकाश विद्यार्थियों में विषय सम्बन्धी अवधारणायें स्पष्ट नही है।
- महाविद्यालय स्तर पर विद्यार्थियों में शोध अभिरूचि का बिल्कुल शून्य होना बहुत की निराशाजनक है। उच्च शिक्षा का उद्देश्य ही विद्यार्थियों में शोध और विश्लेषण की दृष्टि विकसित करना है। किन्तु ऐसे छात्र परास्नातक और शोध के लिए राजनीति विज्ञान विषय में कोई भी योगदान करने में स्मर्थ नही है।
- महाविद्यालयी छात्रों को राजनीति विज्ञान विषय के शोध पत्रों की जानकारी ही नही है और न ही उन्हे शोध पत्र लेखन का ज्ञान है अपने विषय की संगोष्ठियों और सेमिनारों से भी पूर्णतः अपरिचित है।
- महाविद्यालय के स्नातक स्तर के राजनीति विज्ञान के छात्रों में राजनीतिक सक्रियता का प्रतिशत भी बहुत कम है। युवा छात्रों में समाज के प्रति अपने विषय को लेकर दात्यिवों का बोध नही है यही कारण है कि अन्य समाज विज्ञानों की भॅाति राजनीति विज्ञान के विद्यार्थियों को भी समाज में वह आदर और प्रतिष्ठा प्राप्त नही है जो मेडिकल और इंजीनिर्यरिंग के छात्राओं को प्राप्त होती है।

उपरोक्त निष्कर्षो से स्पष्ट है कि शोध पत्र में जिन परिकल्पनाओं का परीक्षण किया गया था वे परीक्षण में सही नही पाई गयी। राजनीति विज्ञान विषय के अध्ययन की स्थिति सीतापुर के महाविद्यालयों में बहुत अच्छी नही कही जा सकती। विद्यार्थियों में विषय के प्रति रूचि न होना इसका एक कारण हो सकता है। किन्तु राजनीति विज्ञान विषय को रोजगारपरक बनाने और उसे प्रतिष्ठित स्तर पर स्थापित करने के लिए विद्यार्थियों के साथ–साथ शिक्षण संस्थाओं और सरकारी नीतियों को भी गम्भीरता से कार्य करना होगा। विद्यार्थियों की अरूचि और विषय में उनकी इस स्थिति को दूर करने के लिए कुछ मौलिक सुझाव इस प्रकार हैः–

1. सभी विश्वविद्यालयों में स्नातक स्तर पर सेमेस्टर प्रणाली को लागू करना, ताकि वर्ष भर के उबाऊ अध्ययन से विद्यार्थियों की रूचि संक्षिप्त पाठ्यक्रमों में बढ़ सके।

2. महाविद्यालयों में स्थिति पुस्तकालयों में उत्कष्ट कोटि की विषय सम्बन्धी पाठ्यपुस्तकों की पर्याप्त संख्या में सुनिश्चित कराना, क्योंकि सीतापुर जैसे नगरों में अच्छी व स्तरीय पुस्तक बुक स्टोर पर उपलब्ध नही हो पाती।

3. महा विद्यालयों को वाई–फाई सुविधा से लैस करना ताकि छात्र/छात्रायें सरलता से राजनीति विज्ञान विषय में उपलब्ध ई–पुस्तकों या ई–कन्टेन्ट का लाभ उठा सकें।

4. सरकार द्वारा अनुदानित व स्वःवित्तपोषित महाविद्यालयों में स्मार्ट क्लास की व्यवस्था सुनिश्चित करना, ताकि विद्यार्थियों को रोचक ढ़ग से राजनीति विज्ञान विषय की अवधारणों को समझाया जा सके।

5. उच्च शिक्षा विभाग द्वारा महाविद्यालयों में प्रत्येक विषय में शोध कार्यो को बढ़ावा देने के लिए आवश्यक संसाधन उपलब्ध कराये जाने चाहिए, संसाधनों के अभाव में विद्यार्थियो को शोध कार्य करना या उनमें शोध अभिरूचि विकसित करना सम्भव नही है।

6. राजनीति विज्ञान अत्याधिक व्यवहारिक विषय है। विश्वविद्यालय द्वारा इसमें प्रयोगीक कार्यो की व्यवस्था अनिवार्यतः की जानी चाहिए, और इसे विद्यार्थियों के मूल्यांकन से सम्बद्ध किया जाना चाहिए। प्रत्येक कक्षा के विद्यार्थियों को एक निश्चित घंटो का फील्डवर्क कार्य प्रोजेक्ट के रूप में दिया जाना चाहिए।

7. राजनीति विज्ञान के पाठ्यक्रमों में शोध पद्धति का ज्ञान स्नातक स्तर पर प्रदेश के सभी विश्वविद्यालय में शामिल हो।

8. राजनीति विज्ञान विषय में संगोष्ठियों और शोध पत्रों तक छात्रों की पहुच बढ़ाने के लिए विशिष्ट अनुदान की व्यवस्था उच्च शिक्षा विभाग द्वारा की जा सकती है।

REFERENCES

वर्मा, एस0एल0 *आधुनिक राजनीतिक सिद्धान्त,* मेरठ, मीनाक्षी प्रकाशन,

मिश्र, डॉ0 विश्वनाथ (2019) *पश्चिमी ज्ञानोदय के वैचारिक संकट,* नई दिल्ली, आक्सफोर्ड यूनिर्वसर्टी प्रेस

बेकनेर्ज, (2010) फ्राम क्लास रूम टू वोटिंग बूथः दी इफेक्ट आफ सिविल एजुकेशन आन टर्नाउट, न्यू वोर्लेन्स, *ए पेपर प्रजेन्टेड इन साउथ पॉलिटिकल साइन्स एसोसियेसन*

एक्टरवर्ग पी (2006) क्लास वोटिंग इन दी न्यू पालिटिकल कल्चर : इकोनामिक, कल्चरल,एण्ड एन्वायरमेंटल वोट्रिग इन 20 वेस्टर्न कन्ट्रीज, *इण्टरनेशनल सोसियोलाजी* **21** (**2**) पृ0 237.261

वर्षफोर्ड क्यू एण्ड फिलिप्स एच0सी0जे0 (1997) स्पेक्टेटर्स इन आस्ट्रेलियन पालिटिक्स? यंग वोटर्स इंटरेस्टेड इन पाफलिटिक्स एण्ड पालिटिकल इश्यूज, यूथ स्टडीज आस्ट्रेलिया, **16** (**4**) पृ011–16